महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

'डॉ. अंबेडकरने सामाजिक-सांस्कृतिक मानवविज्ञान की नींव ड़ाली-डॉ. एस. एन. बुसी

हिंदी विवि में डॉ. बी.आर. अंबेडकर का मानवविज्ञान में योगदान' पर संगोष्ठी का उदघाटन

उदघाटन में बीज वक्तव्य देते हुए डॉ. श्रीनिवास खांदेवाले। मंच पर दाएं से कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे, डॉ. हितेंन्द्र पटेल, कुलपति विभूति नारायण राय तथा डॉ. एस. एन. बुसी

उदघाटन समारोह में विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. हितेंन्द्र पटेल।

उपस्थित अतिथि एवं प्रतिभागी।

वर्धा दि. 29 मार्च 2012: डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने अपनी आयु के 25वें वर्ष में ही सामाजिक-सांस्कृतिक मानवविज्ञान के संबंध में कोलंबिया विश्वविद्यालय में सन 1916 में शोध पत्र प्रस्तु किया था, उसका शीर्षक था– कास्ट इन इंडिया : देअर मेकानिज्म, जेनेसिस एण्ड डेवेलपमेंट'। उस शोध पत्र के माध्यम से उन्होंने मानवविज्ञान के क्षेत्र में अहम योगदान दिया है। वे 20वीं शताब्दी में भारतीय राजनीति के ऐसे विद्वान थे जिन्होंने जाति प्रथा उन्मूलन के लिए 'अंटचेबल' और 'हू वेअर दी शुद्राज' जैसे ग्रंथ लिखकर साहसभरा कार्य किया। वे रचनाबद्ध तरीके जाति सिद्धांत प्रस्तुत करने वाले पुरोधा थे। उक्त आशय के विचार जाने-माने विचारक तथा पूर्व आयुक्त डॉ. एस. एन. बुसी ने व्यक्त किये। वे **'डॉ. बी. आर. अंबेडकर का मानवविज्ञान में योगदान'** विषय पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन के अवसर पर वक्तव्य दे रहे थे। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने की।

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विवि में स्थापित डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र, डॉ. आंबेडकर अध्ययन केंद्र, डॉ. जाकिर हुसैन अध्ययन केंद्र तथा नेहरू अध्ययन केंद्र इन चार इपोक मेकिंग सेंटर्स एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में हो रहा है।

विवि के हबीब तनवीर सभागार में उक्त संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में डॉ. हितेन्द्र पटेल, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता, सुविख्यात अर्थशास्त्री डॉ. श्रीनिवास खांदेवाले तथा कुलसचिव डॉ. कैलाश खामरे मंचस्थ थे।

उदघाटन के प्रारंभ में डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. एम. एल. कासारे ने स्वागत एवं प्रास्ताविक वक्तव्य दिया। डॉ. अंबेडकर के चिंतन पर विश्वविद्यालय में विमर्श हेतु इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि मानवविज्ञान में उनके योगदान को लेकर होने वाली चर्चा से पूरे देश में एक संदेश जाएगा।

अपने बीज वक्तव्य में डॉ. श्रीनिवास खांदेवाले ने कहा कि डॉ. अंबेडकर 1916 में कहा था कि इस देश में सांस्कृतिक एकात्मता है। उन्होंने जाति प्रथा उन्मूलन की दिशा में अपने विचारों को ग्रंथो के माध्यम से प्रस्तुत किये। संविधान लिखते समय भी उनके मन में विषमता उन्मूलन और समानता की स्थापना के विचार थे। संविधान के दिशा-दर्शक तत्व में जातियों पर प्रहार किया गया है परंतु आज के वैश्विकरण के युग में भी जातियां नहीं हट पा रही है और इन तत्वों की अनदेखी हो रही है।

विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. हितेंद्र पटेल ने रेस थ्योरी, ब्रिटिश एंथ्रोपोलोजी, अमेरिकन एंथ्रोपोलोजी पर अपनी बात रखी। जब अमेरिका में मानवविज्ञान की चर्चा चल रही थी तब डॉ. आंबेडकर ने भारतीय जाति प्रथा की बात की। उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने मानविज्ञान में 1916 में जो हस्तक्षेप किया, उससे चर्चा के नए द्वार खुल गये हैं।

अध्यक्षीय उदबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि 'डॉ. अंबेडकर का मानवविज्ञान पर योगदान' इस विषय पर आयोजित संगोष्ठी के बहाने से पूरे शैक्षिक जगत में चर्चा होनी चाहिए। इस आयोजन को एक महत्वपूर्ण पहल बताते हुए उन्होंने कहा असमानता के अनेक रूप हमारे सामने आते है कही वें रंगभेद या कही लैंगिक असमानता के रूप में प्रदर्शित होते है। वर्णाश्रम व्यवस्था का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि वह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें मुक्ति के सबसे कम रास्ते थे और धर्म एक मुख्य कारण था। उन्होंने उपस्थितों को आहवान किया कि डॉ. अंबेडकर के अनछूए पहलुओं पर चर्चा कर उसका पुनर्पाठ करने की आवश्यकता है।

समारोह का संचालन मानवविज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर विरेन्द्र कुमार यादव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. कैलाश खामरे ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर देश-विदेश से आए अतिथि तथा प्रतिभागी एवं छात्र-छात्राएं बडी संख्या में उपस्थित थे। उदघाटन समारोह के

पश्चात आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रो. सूरज पालीवाल ने की। डॉ. गिरीश पांडे सह-अध्यक्ष थे। इस सत्र में डॉ. मशियात रिज़वी, लखनऊ तथा डॉ. गीतिमा अरोडा वक्ता के रूप में विचार रखे।

<u>30 को होगा समापन</u>

30 मार्च को अपराह्न 10.00 बजे से आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ. एच. एस. वर्मा करेंगे। इस सत्र में डॉ.पी. सी. भगत, डॉ. प्रतिभा ताकसांडे, डॉ. प्रदीप मेश्राम, अंजली विमल तथा पंकज उपाध्याय वक्ता होंगे। अंतिम सत्र डॉ. सत्यकेतु की अध्यक्षता में होगा, जिसमें सास्वति मुतसुदे, दीपक भास्कर, अंजना सिंह, प्रियंका वर्मा तथा सुरजीत सिंह वरवाल वक्ता के रूप में विचार रखेंगे।

<u>'देशज शिक्षा' पर आयोजित संगोष्ठी का उदघाटन शुक्रवार को</u>

'देशज शिक्षा' पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन 30 मार्च को 3.00 बजे होगा। समारोह की अध्यक्षता कुलपति विभूति नारायण राय करेंगे। प्रो. मनोज कुमार स्वागत वक्तव्य देंगे तथा न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी बीज वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे देंगे। सिद्धांत और शिक्षा पर प्रथम सत्र 4.00 बजे से होगा जिसकी अध्यक्षता प्रो. सूरज पालीवाल करेंगे। वक्ता के रूप में डॉ. जोसेफ बारा, डॉ.प्रवीण कुमार तथा कविता वाचक्नवी उपस्थित रहेंगे। 31 मार्च को बुद्धिजम और शिक्षा पर आयोजित सत्र 10.00 बजे से होगा जिसकी अध्यक्षता डॉ. एम. एल. कासारे करेंगे। इस सत्र में प्रो. बेला भट्टाचार्य, प्रो. बिमलेन्द्र कुमार तथा प्रो. अंगराज चौधरी वक्ता के रूप में विचार रखेंगे। 11.45 से आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रो. राम शरण जोशी करेंगे जिसका विषय होगा 'आदिवासी और शिक्षा'। सत्र में डॉ. रेशमी रामधोनी, प्रो. इलीना सेन एवं डॉ. जोसेफ बारा वक्ता होंगे। अपराह्न 3.00 बजे से 'गांधी और शिक्षा' आयोजित सत्र में भरत महोदय, डॉ. आशुतोष मिश्रा, शंभु जोशी तथा हिरामन वक्ता होंगे। संगोष्ठी का समापन 4.45 बजे होगा।

<u>बॉक्स में</u>: डॉ. बी. आर. अंबेडकर का मानवविज्ञान में योगदान विषय को लेकर किया गया आयोजन विश्व में पहली बार हो रहा है। भारत में 9 महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों में मानवविज्ञान का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है परंतु उनके पाठ्यक्रमों में भी मानवविज्ञान में डॉ. अंबेडकर के योगदान का कोई जिक्र नहीं है। एस बात का उल्लेख डॉ. एस. एन. बुसी, डॉ. खांदेवाले तथा डॉ. हितेन्द्र पटेल ने भी इस अवसर पर किया। इस अनूठी पहल के लिए देश-विदेश से आए अतिथियों ने कुलपति विभूति नारायण राय और डॉ. एम. एल. कासारे की सराहना की।

बी. एस. मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी